DOI: https://doi.org/10.37547/supsci-ojp-04-01S-17 Pages: 121-128

Oriental Journal of Philology

ORIENTAL JOURNAL OF PHILOLOGY

journal homepage:
http://www.supportscience.uz/index.php/ojp/about

LITERARY TRANSLATION AS A FORM OF IN THE ETHNIC LITERARY RELATIONS BETWEEN EAST AND WEST

Anna Purna C.
Head of the Department of Hindi, Faculty of Humanities, Prof. of University of Hyderabad, India

Abstract: In the modern era, the influence of the West holds significant importance across various domains. Introduction to activities, scientific discoveries, and literary trends of other foreign languages such as German, French, Italian, etc., also comes through English. The cultures of English and Hindi are distinct, with differences in their traditional religious, social, cultural circumstances, literary vocabulary, and grammar. Their vocabulary in Indian languages is similar, with words like 'yajna', 'mahachiti', 'sat-chit', 'ananda', etc., being common. Such similarities are not found in foreign languages. In this article, I aim to draw your attention to these points.

Key words: Eastern, Western, scientific discoveries, language transmission, cultural, religious, social, emotional, intellectual, myth, social consciousness, resistance, etc.

ADABIY TARJIMA SHARQ VA G‘ARB O‘RASIDAGI ETNIKADABIY ALOQALARNING SHAKLI SIFATIDA

पूरब और पश्चिम के साहित्यिक अनुवादों का अंत:संबंध

Annotatsiya: Zamonaviy davrda G'arb ta'siri turli sohalarda katta ahamiyat kasb etadi. Nemis, fransuz, italyan va boshqa xorijiy tillarning faoliyati, ilmiy ixtirolari va adabiy tendensiyalari ingliz tili vositasida keng yoyiladi. Ingliz va hindi tilining madaniyatibutunlay farq qiladi. Ularning an’anaviy diniy, ijtimoiy, madaniy sharoitlari, adabiy so‘z

boyligi, grammatik nuqtai nazari hamturli xil. Hind tillarida ularning terminologiyasi o'xshash – “Yagya”, “Mahachiti”, “Sat-Chit”, ”Anand” va boshqalar. Biroq bunday o'xshashlik boshqa xorijiy tillarda uchramaydi. Taqdim etilgan maqolada ushbu masalalar keng yoritilib beriladi.

Kalit so’zlar: Sharq, G'arb, ilmiy ixtirolar, til aloqasi, madaniy, diniy, ijtimoiy, hissiy, kognitiv, mif, ijtimoiy ong, qarshilik va boshqalar.

सार

आधुनिक युग में विविध क्षेत्र में पश्चिमी प्रभाव बड़े महत्व का है। अन्य विदेशी भाषाएँ जैसे जर्मन, फ्रेंच, इतालवी आदि सभी की गतिविधियों ,वैज्ञानिक आविष्कारों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का परिचय अंग्रेजी से मिलता है। अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों की संस्कृति अलग-अलग है। इनकी परंपरागत धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, साहित्यिक शब्दावली और व्याकरण दृष्टि भी भिन्न है| भारतीय भाषाओं में इन की शब्दावली सामान हैं जैसे - यज्ञ, महचिति, सत्-चित्, आनंद आदि समान हैं इसी तरह की समानता विदेशी भाषाओं में नहीं मिलती। प्रस्तुत आलेख में इन बिन्दुओं पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ।

बीज शब्द

प्राच्य, पाश्चात्य, वैज्ञानिक-आविष्कार, भाषा-संप्रेषण, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, भावात्मक, ज्ञानात्मक, मिथक, सामाजिक चेतना, प्रतिरोध आदि।

प्रस्तावना

[अनुवाद ने विश्व भर में ज्ञान-विज्ञान की मानवीय और भावनात्मक-संवेदना को बदली है। अनुवाद से प्राप्त होनेवाले ज्ञान ने अनुवाद के समाजशास्त्र को एक देश की सीमा से निकालकर दूसरे देश तक पहुँचाया। प्राचीन ग्रीक या संस्कृत का साहित्य कला, दर्शन, धर्म, मिथक अनुवाद के द्वारा ही विश्व भर में फैल गया। इतिहास साक्षी है कि अनुवाद कर्म सामाजिक चेतना की गतिशीलता को प्रबल और सजग रूप में जीवंत रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।]

हर समाज सतत परिवर्तनशील और विकासशील होता है। निरंतर विकास की यह प्रक्रिया कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष, कभी धीमी तो कभी तीव्र गति से चलती रहती है। इसके निर्माण में कई तरह के तत्व सक्रिय रहते हैं। किसी भी समाज की जन चेतना का निर्माण और उसका विकास परिवर्तनशील परिस्थितियों के अनुसार होता है। परिस्थितियों के अनुसार विकसित इस चेतना के निर्माण में जन सामान्य की भाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। ज्ञान-विज्ञान जब एक वर्ग विशेष की भाषा के दायरे में ही जीवित रहता है तब उसका प्रचार-प्रसार सीमित दायरे में ही होता है। परंतु जब ज्ञान-विज्ञान दूसरे समाजों के लिए आवश्यक हो जाता है तब दूसरे भाषाई समाज के लोगों में जागरूकता पैदा होती है। दूसरे समाज में भी अपनी परिस्थितियों, अवस्थाओं, हेतुओं के प्रति सजगता उत्पन्न होती है। दूसरी ओर अन्य राष्ट्रों और समाजों की प्रगति से उसकी अपनी समझ और दृष्टिकोण का विस्तार होता है। कोई समाज जब अपनी परंपराओं, चिंतन धाराओं, दर्शन, संस्कृति, इतिहास और साहित्य को अन्य समाजों की परंपराओं, दर्शन, संस्कृति, इतिहास और साहित्य से तुलना करके देखता है तो तब वह समझ पाता है कि परिस्थितियों में किस तरह के बदलाव की जरूरत है।

पश्चिम की और भारत की संस्कृति कई दृष्टियों से भिन्न हैं, फिर भी मानवीयता के धरातल पर दोनों समाजों में मानवीय प्रवृत्तिगत एकता दिखाई देती है।

प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियाँ शिक्षा और नवाचार पर ज़ोर देती हैं। दोनों संस्कृतियों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और साहित्य के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है। दोनों समाजों में उल्लेखनीय विद्वान, विचारक और आविष्कार हुए हैं।

भाषाई विविधता यूरोप और भारत की विशेषता है। यूरोप के देशों में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, जबकि भारत भी कई भाषाओं का घर है जिनमें भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के अतिरिक्त 1662 बोलचाल की भाषाएँ दिखाई देती हैं।

अनुवाद अध्ययन (Translation Studies) के क्षेत्र में 1990 के दशक में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन को निम्नलिखित बिंदुओं के बल पर स्पष्ट किया जा सकता है।

1.सूचना प्रौद्योगिकी और तकनालजी के विकास के साथ-साथ पूर्व और पश्चिम के बीच भू-राजनीतिक अलगाव मिट गया। पूर्व और पश्चिम के अनुवाद सिद्धांत के विद्वानों के लिए अन्य बातों के साथ-साथ अनुवाद सिद्धांत के सम्मेलनों में मिलना आसान हो गया है।

2. भौगोलिक निकटता समाप्त होने के कारण वैश्विक धरातल पर अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। फलतः अनुवाद प्रशिक्षण और दुभाषिया प्रशिक्षण का कार्य विश्वविद्यालयों में बड़े पैमाने पर होने लगा इससे अनुवाद सिद्धांत में अधिक रुचि पैदा हुई। अनुवाद के क्षेत्र में अनुसंधान होने लगे। पाठ्य क्रम में अनुवाद के विभिन्न पहलुओं से संबंधित पाठ्य क्रम बनाये गये। अनुवाद के अनुप्रयोग से संबंधित पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी विपुल मात्र में होने लगा।

3. इंटरनेट ने भौतिक रूप से दूरस्थ लोगों के बीच सहयोगात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित किया साथ-साथ मिलकर काम करना व्यक्तियों और संस्थानों के बीच पहले की तुलना में अधिक आसान हो गया।

इस पृष्ठभूमि में प्राच्य और पाश्चात्य संपर्क से, परस्पर प्रभाव से विकसित आवश्यकताएँ वर्तमान समय में अनुवाद प्रक्रिया को प्रभावित करने लगी। यदि अनुवाद की प्रक्रिया को दो भाषाओं व समाजों के बीच संपर्क / संप्रेषण के आधार के रूप में स्वीकार करें और उन भाषाई समाजों के विकास की दिशा और समाज की आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण मान लें तो उन भाषाई समाजों के सामाजिक वर्ग / समुदाय की आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

समाज को गतिशीलता प्रदान करने वाले तत्व यदि उन भाषाई समाजों में प्रेरक शक्ति बनेंगे तो अनुवाद की आवश्यकता उन समाजों में महसूस की जाती है। ऐसी स्थिति में उन भाषाई समाजों की भौगोलिक दूरियाँ काम हो जायेंगी। समुदायपरक अस्तित्व की आकांक्षाएँ उन भाषाई समाजों में महत्वपूर्ण हो जायेंगी। अनुवाद उन भाषाई समाजों में संगठन और विकास का प्रेरक तत्व बन जाएगा। समुदायों का खुलापन या स्वीकरण शीलता समुदाय में नयेविचारों के ग्रहण को प्रेरित करती है तो अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता बन जाता है।

यूरोप और भारतीय अनुवाद-प्रक्रिया का विकास इसी आलोक में हुआ था। यूरोप की कई साहित्यिक कृतियाँ वर्तमान भारतीय चिंतन को प्रभावित करने लगी। वास्तव में यह अनुवाद अध्ययन का एक व्यापक क्षेत्र है। मूलतः इस प्रक्रिया को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं।

1. आर्थिक कारक, जो प्राच्य और पाश्चात्य भाषाई समाजों को विकास की दिशा में प्रेरित करते हैं।

2. भू-राजनैतिक कारक समुदायों को संगठित और प्रेरित करते हैं। उदा- भारत में नारीवादी सोच, दलित सोच।

3. भाषाई समुदायों में सामाजिक श्रेणीकरण और वर्चस्व की स्थितियाँ। उदा- भारत में जाति- व्यवस्था।

4. भाषिक कारक जिनके बल पर सामाजिक अस्तित्व का विकास होता है। उदा- भाषाई प्रादेशिकता, हिन्दी भाषी देशों में भोजपूरी, प्रादेशिकता, मैथिली प्रादेशिकता, तेलुगु भाषी क्षेत्र में तेलंगाना की प्रादेशिकता।

5. व्यूहात्मक-कारक जिनके बल पर राज्यों का राजनैतिक संगठन बनता जाता है।

वास्तव में ये कुछ ऐसे कारक है जो यूरोप और भारतीय साहित्य के आपसी अनुवाद की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं जिनके कारण भारतीय साहित्य में वादपरक साहित्य से लेकर प्रतिरोध के साहित्य का सृजन पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हुआ था। भारतीय भाषाओं में प्रतिवादी रचनाएँ, प्रयोगवादी रचनाएँ, नारीवादी और दलितवादी रचनाएँ इस श्रेणी के अंतर्गत आनेवाली रचनाएँ हैं। **1**

इन अनुवादकों के संदर्भ में सांस्कृतिक असमानताओं और सामाजिक असमानताओं के साथ-साथ भाषापरक असमानताएँ अनुवाद की प्रक्रिया को बेहद प्रभावित करती है। इस संदर्भ में अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित अध्ययन क्षेत्रों में अनुवाद सिद्धांतों का विकास हुआ है। फिर इसके साथ अनुवादनीयता की समस्याओं की चर्चाएँ भी होने लगीं। शोध कर्ता इस संदर्भ में अनुवाद प्रक्रिया की समाज शास्त्रीय चर्चाएँ करने लगे।

समग्र अनुवाद में अनुवानीयता की सीमाओं का स्पष्ट आकलन कर पाना कठिन है। क्यों कि अनुवादनीयता अनवरत प्रक्रिया है। स्रोत भाषा के मूल पाठ की इकाई पूर्ण रूप से अनुवाद योग्य (Translatable) अथवा पूरी तरह अनअनुवाद योग्य (Un Translatable) नहीं होती बल्कि कम या अधिक अनुवाद योग्य होती हैं। इसीलिए समतुल्यता स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के मूल पाठों तथा स्थिति संदर्भों के कुछ समान प्रासंगिक लक्षणों के संबंध पर निर्भर करती है।

अनुवादनीयता की दृष्टि से भाषिक इकाईयाँ (Linguistic Units) अथवा भाषा संरचना ही अनुवादक के लिए पर्याप्त नहीं मानी जा सकती क्योंकि आधुनिक लिखित कार्य में भाषा विज्ञान भाषा के प्रकार्यों (Functions) पर भी अब विचार करता है। अपनी भाषा अनेक रूपों में सामने आती हैं और बोध गम्यता (Cognation) तथा सम्प्रेषणीयता (Communicability) के लक्ष्य को पूरा करती है। इसीलिए आज भाषा के सन्दर्भ में उसकी व्यवस्था (system) के स्थान पर उसके व्यवहार या प्रकार्य (performance or functions) को अधिक महत्व दिया जा रहा है। साहित्यिक पाठ में भी भाषा के प्रकार्य अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि यहाँ भी रचनाकार भाषा में उपलब्ध अनेक संरचनात्मक विकल्पों (structural variations) में से अपनी अनुभूति के अनुकूल किसी एक का चयन करता है और अपने कथन को साहित्यिकता प्रदान करता है। इस दृष्टि से यहाँ भाषा के तीन प्रमुख प्रकार्यों का संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है जो इस बात को समझने में सहायक होंगे कि अनुवाद में अनुवादनीयता और समतुल्यता का सम्बन्ध भाषा के इन प्रकार्यों से भी अनिवार्यत : जुड़ा हुआ है और इनकी उपेक्षा करके साहित्यिक पाठ का अनुवाद नहीं किया जा सकता:

भाषिक अनुवादनीयता विशिष्ट रूप में उन प्रकरणों में घटित होती है जहाँ स्रोत भाषा या मूल पाठ की विलक्षण अस्पष्टता ही प्रकार्यात्मक तौर पर प्रासंगिक हो जैसे कि स्रोत भाषा के श्लेषों में। भाषिक स्तर पर अनुवादनीयता का लक्ष्य कुछ अस्पष्टताओं के कारण प्राप्त नहीं हो पाता। जैसे: Time flies। यदि मूल पाठ का यह खण्ड सामान्य वार्तालाप में घटित होता है तो कोई अनुवाद समस्या नहीं होगी, सह मूल पाठ यह प्रदर्शित करेगा कि इसका सन्दर्भ परक अर्थ 'समय कितनी शीघ्रता से व्यतीत होता है' अथवा 'मक्कियों की गति का निरीक्षण कीजिए और तब उचित अनुवाद हो जाएगा। लेकिन यहाँ सन्दर्भ को समझना अनिवार्य होगा क्योंकि भाषा के सम्प्रेषणपरक प्रकार्य में सन्दर्भ की भूमिका यहाँ सबसे महत्वपूर्ण होगी।

दूसरे प्रकार की भाषिक अस्पष्टता बहु अर्थकता के कारण आती है। इसका कारण यह होता है कि एक ही कथन में एकाधिक अर्थ निहित रहते हैं। बिना संप्रेषणपरक सन्दर्भ के बहुअर्थिता शब्द भ्रम उत्पन्न कर सकता है। यह एक इकाई के अनेक अर्थ होने का ही अर्थ नहीं देता वरन् एक इकाई के विस्तृत अथवा सामान्य प्रासंगिक अर्थ के सन्दर्भ तथा विशिष्ट स्थिति परक लक्षणों के एक विस्तृत क्षेत्र को भी व्यक्त करता है। यह बहुअर्थिता का व्यापक सन्दर्भ है। किसी भी प्रदत्त स्थिति के लिए उपयुक्त रूप में इनका प्रयोग प्रकार्यात्मक रूप में प्रासंगिक होता है। यदि स्रोत भाषा में किसी शब्द या इकाई के भिन्नार्थों का विशेष तौर पर प्रतिबंधित प्रयोग क्षेत्र है तो लक्ष्य भाषा में इस बन्धन की समानता कर पाना सम्भव नहीं हो पाता।

अनुवादनीयता के सन्दर्भ में एक बिलकुल भिन्न लगनेवाली समस्या तब उत्पन्न होती है जब स्रोत भाषा पाठ में प्रकार्यात्मक लक्षण विशिष्ट संस्कृति से सम्बद्ध हों और जो लक्ष्य भाषा में पूर्ण रूप से अनुपस्थित हों। यह हमें सांस्कृतिक अनुवादनीयता की ओर ले जाता है। इस प्रकार की अनुवादनीयता भाषिक अन्नुवादनीयता की अपेक्षा प्रायः कम निरपेक्ष ‘Absolute’ होती है।

भाषा का सामाजिक सन्दर्भ भी अनुवादनीयता को कई धरातलों पर प्रभावित करता है। स्रोत भाषा में बोली, मानक रूप, सामाजिक विकल्पों अथवा भौगोलिक विकल्पों में से किसी एक का चयन स्थिति परक लक्षण हो सकता है। इसी प्रकार वस्त्रादि आभूषण (Clothing articles) तथा अन्य कई वस्तुएँ संस्कृति के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करती हैं, जो एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होती हैं तथा एक भाषा से दूसरी भाषा में भी। अतः यहाँ भी अनुवादनीयता की अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

भाषा संदर्भ के अभाव में ही यह प्रायः स्वीकार किया जाता है कि ‘Home’ जैसे शब्द अमूर्त हैं, अतः अनुवादनीय हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ‘He's at Home’ अथवा ‘I am going home’ जैसी उक्तियों के अनुवाद समानार्थक रूप में अधिकांश भाषाओं में किए जा सकते हैं। परन्तु ‘Home’ के कई सन्दर्भ हैं जो उसका अनुवाद के लिए अनुवादक से अलग अपेक्षाएँ रखते हैं। उदाहरण के लिए –

Home Minister = गृह मन्त्री

Home Consumption = निजी खपत

Home Appliances = घरेलू उपकरण

Home rule = देशी शासन

Home Safety = आन्तरिक सुरक्षा (कामायनी अनुवाद समीक्षा ,पृ.सं.35&36)

जैसे प्रयोगों में ‘Home’ का सन्दर्भ भिन्न है। अतः हिन्दी में प्रयोग स्थल पर मात्र गृह / घर के रूप में इनका अनुवाद नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार भावुकता से सम्बद्ध प्रयोग भी दूसरी भाषाओं में अन्तरित नहीं हो पाते। जैसे - Home, Sweet Home। भाषिक, सांस्कृतिक भाषा-प्रकार्य, भाषा सन्दर्भ की दृष्टि से आज अनुवादनीयता पर व्यापक चर्चा प्रारम्भ हो चुकी है।

अनुवाद में नैकट्य (approximate) अनुवाद से लक्ष्य भाषा में एक असाधारण (unusual) अन्विति विन्यास (collocation) उत्पन्न हो जाता है। अतः मूल पाठ के सन्दर्भगत अर्थ की सहायता लिये बिना या सांस्कृतिक भिन्नताओं के सन्दर्भ को समझे बिना सटीक अनुवाद असम्भव है। इस दृष्टि से अनुवादनीयता के दो महत्वपूर्ण घटक निर्धारित किए गए हैं:

(क) भाषा वैज्ञानिक ज्ञान-इसके द्वारा अनुवादक को लक्ष्य भाषा के पाठ के निर्माण में सहायता मिलती है । पुनर्गठित और पुनः सृजित पाठ (अनूदित पाठ) लक्ष्य भाषा का मौलिक पाठ लगे, इसमें भी भाषा वैज्ञानिक ज्ञान सहायक होता है ।

(ख) सन्दर्भगत ज्ञान: यह ज्ञान इसलिए आवश्यक माना गया क्योंकि मूलपाठ की रचयिता (सम्प्रेषक) आगे-पीछे जाकर पाठ को बुनता और संगठित करता है । यह ज्ञान भी मूल पाठ लेखन की नई रचना और पुरानी रचना को प्रस्तुत करने का ढंग प्रदान करता है । निश्चित ही ऐसा करते समय वह भाषा को भी उपयुक्त एवं अपेक्षित रूपाकार प्रदान करता है ।

(ग) सामाजिक ज्ञान: यह ज्ञान भाषा के भीतर ही निहित होता है क्योंकि भाषा एक सामाजिक वस्तु (Social phenomena) है । ये सामाजिक तत्व भाषा में 'नियम' के रूप में संयोजित होते हैं । इनकी सामान्य जानकारी उस भाषा समुदाय के प्रत्येक सदस्य को स्वतः होती है । लेकिन अनुवादक को यह देखना पड़ता है कि मूल भाषा में कोई उक्ति किस सामाजिक सन्दर्भों में, किस रूप में व्यक्त हुई है और क्यों?(का.अनु.स.,पृ;36)

दोनों भाषाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल नितांत भिन्न है, फिर भी अनुभवी एवं भावुक अनुवादक मूल काव्य के भावार्थ और शब्दार्थ के सुचारु रूप से अपने अनुवाद में उपस्थित करने का यथासंभव प्रयत्न करता है । उदाहरण के लिए हिन्दी के महाकाव्य कामायनी का अंग्रेजी अनुवाद बनारस के श्री साहनी ने किया । अनुवाद की भाषा विजातीय भाषा होने पर भी भारतीय संस्कृति को अंग्रेजी पाठकों तक पहुँचाने और समझाने का प्रयत्न करती है जो सराहनीय है । इसमें भावानुवाद और शब्दानुवाद के अलावा कहीं-कहीं अनुवादक ने अपनी मर्यादा और सीमा को तोड़कर मात्र मूल के भाव लेकर पुनः सृजन भी किया है और अनुवाद को लक्ष्य भाषा के पाठक के लिए बोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया है । अनुवाद की इस प्रवृत्ति को निम्नलिखित उदाहरणों में देखा जा सकता है ।

1. समरस थे जड़ या चेतन सुंदर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती आनंद अखंड घना था ।

(मू.पृ.135)

All objects conscious or un-conscious were
Pervaded by the savour of one life,
And beauty was incarnate everywhere.
And the One Consciousness was sporting round,
And Bliss intense and undivided reigned.

(अ.पृ.215)

यह पद्य कामायनी काव्य का अंतिम पद्य है । इसमें प्रसाद ने 'जड़' या 'चेतन' दोनों को एक ही रूप देखने पर किस तरह का अलौकिक आनंद प्राप्त होता है इस पर विचार करते हुए काव्य को समाप्त किया है । मूल पद्य में जिस प्रकार का भाव प्रकट किया है उस तरह का भाव अनुवाद के पद्य में प्रकट नहीं हो पाया । अनुवादक डॉ. साहनी ने पुनः सृजन करके मूल के भाव को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है । लेकिन मूल में जो प्रभाव और अनुभूति की तीव्रता प्रकट हो रही है, वे अनुवाद में नहीं उतर पाई है । इस पद्य में पुनः सृजन के अलावा शाब्दिक अनुवाद का भी प्रयास किया गया है । मूल पद्य में 'समरस थे' कहा गया है जिसके लिए अनुवाद 'Pervaded by the Savour of one life' किया गया है जिससे 'समरसता' का अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा है ।

भारतीय आध्यात्मिक भावना की अनुभूति को प्रकट करनेवाले संस्कृत शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद कितना कठिन है, इस उदाहरण से हमें विदित होता है। हिन्दी और तेलुगु भारतीय सजातीय भाषाओं के अनुवाद में इन शब्दों का ज्यों का त्यों प्रयोग करने की सुविधा होने से वहाँ ऐसी दिक्कत नहीं हुई। परन्तु अंग्रेजी के विजातीय भाषा होने से अनुवादक को हिन्दी के उपयुक्त शब्दों का चयन लक्ष्य भाषा अंग्रेजों में करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा है। फिर भी अनुभवी अनुवादक ने अपनी विद्वत्ता के बल पर काफी हद तक अपने त्यों उतारने का सफल प्रयत्न किया है। अनुवाद में मूल भाव को ज्यों का त्यों उतारने का सफल प्रयत्न किया है।

एक तुम, यह विस्तृत भू-खंड प्रकृति वैभव से भरा अमंद,
कर्म का भोग, भोग का कर्म, यहीं जड़ का चेतन-आनन्द

(मू.पृ.25)

अंग्रेजी अनुवाद

What sad contrast between thee and this world
Wide spread and active, full of Nature's wealth
Delight of action, action of delight
This is the conscious Bliss of Matter dull.

(अ.पृ.73)

मूल कवि प्रसाद ने श्रद्धा के माध्यम से मनुष्य को 'आनन्द' पाने का मार्ग बताये हैं। अनुवाद में मूल के समतुल्य ही शब्द रखे गये हैं। परन्तु मूल में जिस तरह की गम्भीर भावना मिलती है, वह अनूदित पंक्तियों में नहीं आ पाई है। पहली और दूसरी पंक्ति का अनुवाद लक्ष्य भाषा के अनुसार किया गया है। लेकिन यहाँ 'What sad contrast between thee and this World' द्वारा पाठकों के मन में प्रश्न उत्पन्न कर दिया गया है कि यह 'Sad Contrast' कहाँ से आया ? मूल में 'कर्म सिद्धान्त' का महत्व दिया गया है। लेकिन लक्ष्य भाषा के पाश्चात्य होने के कारण अनुवाद में 'कर्म सिद्धान्त' का आभास नहीं मिलता। 'भोग' का अनुवाद 'delight', 'कर्म' का 'Action', जड़ चेतन का 'Bliss of matter dull' अनुवाद किया गया है। अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार किया गया है, लेकिन वह मूल का आशय प्रस्तुत करने में पूरी तरह से सफल नहीं है।(कामायनी अनुवाद समीक्षा ,पृ:111)

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि अनुवादक ने अंग्रेजी अनुवाद को मूल काव्य के आशय के नजदीक लाने का पूरा प्रयत्न किया है परन्तु अनुवाद की भाषा या लक्ष्य भाषा का एक भिन्न संस्कृति की भाषा होने के कारण और उसकी भावाभिव्यक्ति की पद्धति भिन्न होने के कारण वह पूरी तरह से मूल काव्य के अर्थ को व्यक्त नहीं कर पाता।

अंतः प्राचीन और पौराणिक परिप्रेक्ष्य की कथावस्तु को लेकर आधुनिक समाज के लिए महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः अंग्रेजी अनुवाद में भी उसका आभास लाने के लिए अनुवादक ने पुरानी अंग्रेजी और आधुनिक अंग्रेजी के मिश्रित भाषा रूप का प्रयोग किया है। कुछ शब्दों, विशेषकर सांस्कृतिक और दार्शनिक शब्दों का लिप्यंतरण किया है। लिप्यंतरण से यह लगता है कि शायद यह अनुवाद भारतीय अंग्रेजी पाठकों के लिए ही होगा, क्योंकि इनके लिए कोई व्याख्यात्मक अर्थ टिप्पणी या पाद टिप्पणी भी लिप्यंतरण के साथ अनुवादक ने नहीं दी है। यह अनुवादक की विवशता भी हो सकती है अथवा पाश्चात्य पाठकों में भारतीय परम्परा, सभ्यता और संस्कृति का परिचय पाने की जिज्ञासा उत्पन्न करने की आकांक्षा भी।

अंग्रेजी अनुवाद संरचना और शब्द चयन मूल के निकटतम समतुल्य नहीं हो पाता, क्योंकि विजातीय भाषा होने के कारण मूल के वाक्य रचना के क्रम को पकड़ना उसके लिए कठिन है। ‘कामायनी’ जैसे काव्य में आये विशिष्ट अर्थों के द्योतक शब्दों को उनकी पूर्णता में ये अनुवाद नहीं पकड़ पाता।

अनुवादनीयता की दृष्टि से अंग्रेजी अनुवाद में मूल के कई अंश अनुवाद को पूर्णतः बोधगम्य नहीं हुए जिससे कि उसके अनुवाद का अर्थ पक्ष कमजोर हो गया है। कहीं-कहीं अनुवादक अर्थ को तो पकड़ सका है लेकिन लक्ष्य भाषा की सीमा के कारण अर्थात् लक्ष्य भाषा में उन इकाइयों के शब्द अनुपलब्ध होने के कारण वह उन्हें किसी प्रकार से अभिव्यक्त कर पाता है। ऐसा करने से कभी उसका अनुवाद आंशिक अर्थ दे पाता है तो कभी मूल से एकदम अलग अर्थ देने लगता है।

समग्रतः यूरोप और भारत के साहित्यिक अनुवाद और अनुवाद सिद्धांत अध्ययन समाज की चेतना के निर्माण में सहयोग देते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में ज्ञान-विज्ञान के किसी एक भाषाई क्षेत्र में भौगोलिक सीमाओं के अंतर्गत बांधकर नहीं रख सकते हैं। जैसे की ऊपर स्पष्ट किया गया है। 1990 के बाद प्राच्य और पाश्चात्य अनुवाद प्रक्रियाओं की पृष्ठभूमि में यूरोप और एशियाई समाजों की जातियों और समुदायों की जरूरतें सक्रिय दिखाई देती हैं। भूमण्डलीकरण ने भौगोलिक निकरता को समाप्त कर दिया है। तकनॉलजी भाषाओं के अनुवाद को आसान बना रही है। इस क्रम में विश्व में भाषाई सह-अस्तित्व को पहचानते हुए विकास के पथ पर वैश्विक समाजों की जरूरतों का अध्ययन करते हुए अनुवाद सिद्धांतों के सहारे आगे बहने की जरूरत को पहचानना आज की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कामायनी (हिंदी) मूल ग्रन्थ : जयशंकर प्रसाद।
2. कामायनी (अंग्रेजी अनुवाद) : अनुवादक : डॉ.बी.यल .साहनी।
3. अनुवाद समीक्षा: कामायनी .डॉ .अन्नपूर्णा अमेज़ान से ई संस्करण सहित
4. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएं (सं) रविन्द्रनाथ श्रीवास्तवऔरकृष्ण कुमार गोस्वामी, दिल्ली आलेख।
5. अनुवाद विज्ञान की भूमिका : कृष्णकुमार गोस्वामी।
6. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं: नगेन्द्र, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हॉउस ।
7. Bell. R.T. 1991 Translation and Translating: Theory and Practice Longman: London.